हरेराम त्रिपाठी ने तत्त्वचिन्तामणिदीधितिप्रकाशसर्वोपकारिणी का समीक्षात्मक सम्पादन किया है जिनका जीवनवृत्त निम्नलिखित है। प्रो0 त्रिपाठी श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय-संस्कृत-विद्यापीठ में आधुनिकविद्या संकायप्रमुख एवं सांख्ययोग-न्याय-मीमांसा-जैनदर्शन-सर्वदर्शन-विभागाध्यक्ष एवं मानविकी-आधुनिकज्ञान-शोधविभागाध्यक्ष रहे हैं। वर्तमान समय में दर्शनसंकायाध्यक्ष एवं अद्वैतमीमांसा विभागाध्यक्ष हैं। इनका अध्यापन एवं शोध अनुभव 27 वर्ष है। नव्यन्यायाचार्य एवं शाङ्करवेदान्ताचार्य में क्रमश: 1 एवं 7 स्वर्णपदक इन्होंने प्राप्त किया है। इनके 65 शोधपत्र, 18 लेख, 14 ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। 11 अन्तर्राष्ट्रिय कान्फ्रेंस, एवं 60 राष्ट्रिय संगोष्ठी में शोधपत्र वाचन कर चुके हैं। 7 विशिष्टाचार्यछात्र, 13 विद्यावारिधिछात्र इनके निर्देशन में उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। शांकरपुरस्कार, पाणिनीपुरस्कार, सरयूपारीणरत्नपुरस्कार एवं वादरायणव्याससम्मानराष्ट्रपति द्वारा प्राप्त कर चुके हैं। राष्ट्रिय संस्कृतसंस्थान के बोर्ड ऑफ मैनेजमेन्ट के यू.जी.सी. नामिनी सदस्य हैं। आई.सी.पी.आर. के काउन्सिल के एच.आर.डी. नामिनी सदस्य हैं। आदर्श संस्कृत महाविद्यालय ऊना हिमाचल प्रदेश के प्रबन्धसमिति एवं वित्तसमिति के अध्यक्ष हैं। अनेक विश्वविद्यालयों में अध्ययनमण्डल, विभागीय शोध समिति आदि के सदस्य हैं।

ISBN 978-93-80829-60-9
9 789380 829609
₹ 600

Prakashika - 40

Tattvachintāmaṇi-Dīdhiti-Prakāśa-Sarvopakāriṇī of Mahādeva

(Part 1)

Editor

Hareram Tripathi

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन
॥ विज्ञानमुपास्व ॥
National Mission for Manuscripts

प्रकाशिका - 40
Prakashika - 40
महादेवविरचिता तत्त्वचिन्तामणिदीधितिप्रकाशसर्वोपकारिणी
Tattvachintāmaṇi-Dīdhiti-Prakāśa-Sarvopakāriṇī of Mahādeva
राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन
॥ विज्ञानमुपास्व ॥
National Mission for Manuscripts

प्रकाशिका - 40

महादेवविरचिता तत्त्वचिन्तामणिदीधितिप्रकाशसर्वोपकारिणी

(भाग 1)

सम्पादक

हरेराम त्रिपाठी

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन
॥ विज्ञानमुपास्व ॥
National Mission for Manuscripts

भारत की पाण्डुलिपि सम्पदा के संरक्षण तथा उसमें निहित ज्ञान के प्रचार एवं उपयोग के लिए भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने सन् 2003 में राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की स्थापना की। मिशन ने इस दायित्व को अनेक कार्यक्रमों के तहत पूरा करने का कार्य आरम्भ किया है। इसी क्रम में अप्रकाशित पाण्डुलिपियों को **प्रकाशिका** नामक सीरीज के अन्तर्गत तीन रूपों में प्रकाशित किया जाता है।

1. प्रतिलिपि संस्करण (facsimile edition)
2. आलोचनात्मक संस्करण (critical edition)
3. अनुवाद एवं व्याख्या सहित आलोचनात्मक संस्करण

इस प्रकाशिका-40 में न्याय शास्त्र की एक महत्वपूर्ण अप्रकाशित पाण्डुलिपि का समालोयनात्मक सम्पादन का प्रकाशन हो रहा है।

मूलग्रन्थ तत्त्वचिन्तामणि लेखक गंगेशोपाध्याय, दीधितिटीका-रघुनाथशिरोमणि, प्रकाशटीका-भवानन्दतर्कवागीश, सर्वोपकारिणीटीका-महादेव। अनुमितिलक्षणप्रकरण, अनुमानप्रकरण, पञ्चलक्षणी, सिंहव्याघ्रलक्षण, व्यधिकरण-धर्मावच्छिन्नाभावघटितव्याप्तिलक्षण, पूर्वपक्षीयव्याप्ति, सिद्धान्तलक्षण। अनुमान का लक्षण सपदकृत्य, अनुमिति का लक्षण, व्याप्ति के पांच पूर्वपक्षीय लक्षण, व्याप्ति के सिंहव्याघ्र लक्षण, दीधितिकार द्वारा स्वीकृत अभावघटितव्याप्ति का लक्षण एवं पूर्वपक्षीयव्याप्ति का लक्षण निरूपित कर सिद्धान्त व्याप्ति के स्वरूप का विस्तृत विवेचन इस ग्रन्थ में किया गया है। परिशिष्ट क से च तक है। च अन्तिम परिशिष्ट में पारिभाषिक शब्दों का विवेचन है। परिशिष्टों में मुख्यनियम, अन्यग्रन्थ या आचार्यो का विवरण, मुख्यपदानुक्रमणी, मुख्यसिद्धान्त, विविधविषय तथा न्यायपारिभाषिकपदानुक्रमणी यथाक्रम दी गयी है। तदनन्तर सन्दर्भग्रन्थ सूची है।